आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ. सरलासिंह 'स्निग्धा'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ सरला सिंह "स्निग्धा"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-166-4
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, **डॉ सरला सिंह "स्निग्धा"**
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY DR. SARLA SINGH SNIGDHA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	कोरोना	6
2.	कर्ज़	7
3.	कवि	8
4.	क्या करें?	9
5.	मधुमास	10
6.	बेदाग	11
7.	बात	12
8.	नारी	13
9.	विरह	14
10.	माँ	15
11.	मुसाफिर	16
12.	जलाओ दीये	17
13.	पीड़ा	18
14.	अपनापन	19
15.	वो उड़ती है	20
16.	खामोशी	21

कोरोना

कोरोना शत्रु विश्व में, महाकाल-सा डोलता।
काल बन के छा गया, विश्व को निगल रहा।
रोक सके कौन इसे, कोई न समझ रहा।
हथियार ये हार गए, दौलत बिलख रही।

विज्ञान हारता दिखे, प्रयास टूटता रहा।
एक लघु विषाणु से, जगत हारता दिखे।
धर्म कर्म पीछे हटे, लोग एक हो गए।
धर्मजाति भूल गए, शत्रु खड़ा सामने।

मंदिरों की घंटियां, मस्जिदों के आयतें।
चर्च की वो प्रार्थना, गुरुद्वारों के भजन।
शांत खड़े सारे हैं, भगवान एक हो गए।
इंसान एक हो गए' एक राह चल पड़े।

मानवता की पुकार, विश्व एक हो गया।
कर्म एक हो गया, धर्म एक हो गया।
शत्रु खड़ा है सामने, संसार एक हो गया।
पशु-पक्षी अचरज करें, मानव कहां खो गया।

अदृश्य शत्रु सामने, जगत हारता दिखे।
प्रयास एक ही दिखे, नरभक्षी से दूर ही रहें।
रक्तबीज सा शत्रु यह, दूर इससे हम सब रहें।
क्षीण स्वयं होगा पापी, अपनी ही मौत यह मरे।

कर्ज

जिन्दगी के कर्ज है बड़े अजीब,
अलग अलग रंगों में सजे हुए।
कुछ कर्ज कुछ चुका सके,
कुछ कर्ज ना उतर सके कभी।
ईश्वर ने दिया मानव का रूप,
ये कर्ज है प्रभु का बड़ा।

कुछ हद तक चाहें सकते चुका,
मानवता को बढ़ाकर आगे हम।
माँ ने दिया था रूप उसको,
उसका भी कर्ज चुक सकता नहीं।
कुछ हद तक सकते हैं चुका,
माँ की माँ सम की सेवा करके।
गुरूवर ने दिए संस्कार फिर,
ये कर्ज भी है बहुत बड़ा।

गुरूऋण है जो कुछ सकते चुका,
दूजों को देकर शिक्षा का धन।
है कर्ज जीवन के बड़े अजब,
कुछ का तो कोई मोल नहीं।
बस कुछ हद तक कर सकते अदा,
मानव के कल्याण में बन भागी।
बाकी सब है स्वार्थ के खेल,
उनको कहते हैं विनिमय।।

कवि

कवि तुम बस इतना कर जाना,
जीवन को सत्पथ दिखलाना।

रोते आंखों में खुशियां चमकें,
दुखियों को हंसी तुम दे जाना।

जन-जन में नवजागरण आये,
कुछ तुम ऐसा ही लिख जाना।

नखशिख के चितवन से हटके,
तुम आदर्श नया इक गढ़ जाना।

तुलसी सम ज्योतिर्मय रचना हो,
तुम ऐसी इक ज्योति जला जाना।

अंधियारों में भटकते आज पथिक,
तुम उनको नव राह दिखा जाना।

व्यंग्य छोड़ कुसुमित सुरभित,
तुम पावन-सा गीत सुना जाना।

सूर कबीर सी चेतनता दे ऐसी,
रसखान रहीम सा रच जाना।

क्या करें?

इंसान खड़ा रो रहा है आज क्या करें?
वायरस कोरोना घेर रहा हाय क्या करें।

मन्दिर और मस्जिद बन्द देखो आज हैं,
गुरुद्वारों की बन्द प्रार्थना हाय क्या करें।

इतरा रहा था आदमी बम गोलियों पे जो,
दौलत न आती काम आज हाय क्या करें।

इंसान ही इंसान का दुश्मन जो बन गया,
खुद ही बनाया वायरस भगवान क्या करें।

दुबका डोलता फिरे अपने ही हथियार से,
अपना बनाया गढ्ढा है फिर कौन क्या करे।

मधुमास

मन मयूर नाचन लगा, जगा हृदय में आस।
मेघ संग आयी खुशी, बरसा जब विश्वास।।

जीवन यह सहता रहा, हरदम अतुलित पीर।
बहे संग बादल सदृश, ढुलके नयनन नीर।
पिया संग जागी खुशी, हियवट पुष्प हजार।
नाचे मन जा गगन पे, जागी प्रीत अपार।
बिन बोले ही सुन रहे, बोली बिना प्रयास।

रात दिवस दोनों हुये, महापर्व है आज।
जाने नहीं स्वयं ही, क्या है इसका राज।
माया ने रचना रची, चार दिनों का खेल।
पियगृह ते इस जगत की, सखी नहीं है मेल।
जगत गेह में हैं खड़े, महामिलन की प्यास।

निर्झर थे नयना झरे, चितवत पिय की ओर।
इस पुलकन इस प्रीत की, कोई ओर न छोर।
मन मयूर नाचत सखी, पलक ढके दो नैन।
ओठों पर बिन कहे ही, झलक रहे हैं बैन।
मेघ संग आयी खुशी, मनभाया मधुमास।।

बेदाग

इतराता है क्यों चाँद, इतना तू बता दे,
मेरी माँ से ही तो, सुन्दरता तूने पाई हुई।

देख तुझको मिलती है
जितनी खुशी,
माँ देखने पर मिलती
उससे भी ज्यादा।
तेरे दामन में शीतलता है
जो समाई हुई,
मेरी माँ के दामन से ही
तो है लाई हुई।

ये चमक इतना
जिसपर तू इतरा रहा,
मेरी माँ के ही चेहरे से
तो है चुराई हुई।
इतराता है क्यों चाँद
इतना तू बता दे,
मेरी माँ से ही तो
सुन्दरता तूने पाई हुई।

चाँद माँ से मेरी आज
कहना तू ये जरा,
मुझको है उसकी
बड़ी याद आई हुई।
तेरे चेहरे पे तो है देख
कितने सारे दाग,
मेरी माँ का चेहरा तो
सुन्दर-सा बेदाग है।

बात

कहें क्या बात हम अपनी, हमारी बात ही क्या है।
जमाने के सताऐ हैँ, जमाने की कहें क्या हम?
बात ही बात में जज्बातों की
कुछ बात कहते हैं,
जमाना है किसी का ना।
सभी स्वार्थ के हैं साथी हैं,
बेबात कोई भी न मिला।
दोस्त तो ना मिला कोई,
दुश्मन ही सरे राह मिले।
गैर तो गैर ही थे,
अपने भी पराये निकले।
बात जब चल ही गई,
बातों ही बातों में।
बिना बात बातों का,
बतंगड़ न बना दे कोई।
बात में दम इतना,
कि बेदम कर दे।
तीर तलवारों को हरा दे,
गोली बारुद से भी
तेज है बातों का असर।
घाव तो ठीक हो,
गोली व बारुद का भी।
बातों से लगा घाव,
कभी न भर पाये।
बात बनाने की,
हमें आदत ही नही।
बात ही बात में,
बात बनती ही गई।
बात संभल कर,
जरा अपनी रखिए।
बात बिगड़ जाए, तो फिर क्या कहिये।
कहें क्या बात हम अपनी, हमारी बात ही क्या है।

नारी

नारी है नारायणी जग में
नारी जग की जीवनदाता है।
माँ की सुन्दर ममता नारी में,
नारी भाई की प्यारी बहना है।

घर को घर बनाती जो,
वो तो केवल इक नारी है।
पति की सुन्दर सी काया की,
अर्द्धांगिनी तो बस नारी ही है।

नारायण जग के निर्माता,
नारी जीवनदायक जग की है।
पीड़ा सहकर खुशियों को बाँटती,
देवी सम केवल वह नारी ही है।

मत करना अपमानित इसको,
देवी दुर्गा की यह मूरत भी है।
ज्ञानमयी माँ सरस्वती सम नारी,
जग की यह तो बस कल्याणी है।

विरह

रे भंवरा पिय से जा कहियो,
याद तिहारी मोहे सताती है।
मुस्कान तेरी दिल में है बसी,
दिन रैन का चैन हटाती है।

लागत न कहूं मोरा जियरा,
तेरी विरह मोहे तड़पाती हैं।
कर वादा गयो परदेश सखा,
वादा मोहे याद दिलाती हैं।

मत देर करौ अब आओ प्रभू,
धरती फिर तोहे बुलाती है।
यमुना तट ताकत राह तेरी,
आवन की आस जगाती हैं।

गोकुल मधुवन गोपी ग्वाले,
इक आस से तोहे बुलाती हैं।
आओगे जरूर मेरे बनवारी,
मन से यह आस न जाती है।

माँ

मेरी माँ मुझे चरणों में ले ले,
मेरी जिन्दगी को तू संवार दे।

कंटकों में चल रही हूं माता,
मेरे जीवनपथ को संवार दे।

तू है जगत की जननी माता,
जन-जन को अपना प्यार दे।

मां तू पालनकर्ता है जग की,
जग के दुर्बलों को वरदान दे।

रह जाए ना कोई भूखा मैया,
अन्नपूर्णा मां ऐसा वरदान दे।

बेघरों को माता छत तू दे दे,
निर्बलों पर शक्ति तू वार दे।

मेरी मां तू ही जगकी नियंता,
जग को तू खुशियां उपहार दे।

मुसाफिर

मुसाफिर हैं सारे ही यहाँ पर,
जग है एक मुसाफिरखाना।
ठहरते हैं चार दिन हम सब,
फिर तो जाने कहाँ ठिकाना।

लगा ही रहता साथी यहाँ पर,
लोगों का है नित आना जाना।
भूल जाते हम फिर भी क्यों,
दुनिया तो एक इबादतखाना।

मानने लगते क्यों लोग यहाँ,
नहीं पड़ेगा यहाँ से है जाना।
हत्या चोरी व मारकाट का वे,
बुनते रहते नित नव तानाबाना।

भूल रहा है सुन पागल पंथी,
नहीं यहाँ दो दिन का ठिकाना।
जीवन के सच को तू बाँच ले,
राहें हैं अलग पर एक ठिकाना।

मानव हो तो इतना करना तुम,
जीवन को बस सफल बनाना।
मुसाफिर हैं सारे ही यहाँ पर,
जग है एक मुसाफिरखाना।

जलाओ दीये!

जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना ही,
ये अंधेरा किसी घर में भी रह न जाये।
उजाले निकल तेरे गलियों से साथी,
सारे ही जहाँ को वे रोशन बना दें।
अंधेरे की दुनिया कहीं रह न जाये,
आओ कोई इक तरीका निकालें।
सड़कों, गलियों मे खोता है बचपन,
चलो आज मिलकर इसको बचायें।
लक्ष्मी माँ का पूजन तो करते सारे,
गृहलक्ष्मी भी पूजो ये प्रण नया लो।
जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना ही,
ये अंधेरा किसी घर में भी रह न जाये।
बस एक ही धर्म मानवता का साथी,
बस इसको ही हमसब अपना बनायें।
न कोई हिन्दू न कोई मुस्लिम ईसाई,
सारे हैं मानव और इक दूजे के भाई।
मन्दिर की घंटी मस्जिद का अजान,
दोनों ही संग संग संगीत की लय दें।
जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना ही,
ये अंधेरा किसी घर में भी रह न पाये।
नारी जगत की सृष्टि कर्ता है मानव,
सम्मान का उसके सच्चा संकल्प लो।
न वो बने बारबाला न बेची ही जाये,
न बूढ़ो के संग ब्याह हों बच्चियों के।
सम्मान करना उनकाबाहर भी वैसा ही,
करते हो जैसा माँ, बहन व बेटियों का।
तोड़ो प्रथायें छोड़ो अपनी मानसिकता,
जो मातृसत्ता जग का, हो मान उसका।
जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना ही,
ये अंधेरा किसी घर में भी रह न पाये।

पीड़ा

शाम खिली निशा आई, चाँद लिखे कथा पीड़ा।
झरे चांदनी निर्मल अमित, मन मयूर करता क्रीड़ा।

चांदनी में मधुर मधुर, मिलकर मन डोले।
चार बातें प्रीत भरी, मधुर मधुर वचन बोले।
चितवन की वे स्मृतियां, याद आते वे नैना।
मधुमास मधुवाणी वो, है निशब्द आज बैना।
सदा साथ निभाना है, लेते आज यह व्रीड़ा।

आकुलमन विचलित लगे, हैं समक्ष कैसी घड़ियां।
कठिन पंथ दुष्कर लगें, नयननीर लगी झड़ियां।
शत्रु खड़ा सामने ही, मनुज हाथ मले डोले।
हृदयमध्य कितने बातें, डोले आज बिनु बोले।
शाम खिली निशा आई, चाँद लिखे कथा पीड़ा।

दग्ध हृदय मध्य सोया, आक्रोश पिये है अनल।
मनुज रचित ये कर्मबीज, फलित आज बनके गरल।
मनुज पर ही टूट पड़ा, मानव का ही ये करम।
बादल से छाये पड़े, टूटे अब सारे भरम।
साफ स्वच्छ पटल हुआ, डोल रही जगत पीड़ा।

अपनापन

अब अपनापन नहीं मिलता,
है कहीं भी सुन मेरे साथी।

सब के सब लोग नजर आते,
बनावट में लिपटे हुए से भाई।
अब उसूलों की जहाँ मे साथी,
नहीं कीमत ही कोई होती है।

अबतो दौलत से इस दुनिया में,
हर एक रिश्ते तुला करते अब।
जग में सभी अब तो फिरते है,
स्वार्थ का आँख पे लगाके चश्मा।

अब तो इक दूजे से रखते है सब,
बस काम भर का ही वास्ता भाई।
हमने लोगों को देखा है टूटते हुए,
अपनो के लिए इस जहाँ में साथी।

अपनेपन की तड़प समेटे सीने में,
जाने कितने तड़पते हैं दुनिया में।
अपनापन नहीं मिलता जहाँ में,
ढूँढने पर कहीं भी चाहे कहीं भी।

ना घरों में ही दिखती है झलक,
नहीं मिलती बाजारों में ही कही
कहाँ से लायें ढूँढ़कर अपनापन,
मिलती थी जो गैरों से भी कभी।
मिलती थी जो गैरों से भी कभी।।

वो उड़ती है

पंख नही तो क्या, अरमानों के पंखों से
दूर दूर तक क्षितिज पार, संग हौसला लेकर अपार
वो उड़ती है।
तोड़ सकी सदियां भी, चाहा कितना था
थक पीछे हटती ही जातीं
वो उड़ती है।
अपनों ने पर कतरे उसके, कितनी ही बार
उग आते है फिर फिर, शक्ति समेट और भी सबल
वो उड़ती है।
संग किया खुद ईश्वर ने, दोहरा व्यवहार
नर को दे शक्ति अपार, नारी को कमजोर बनाया।
निर्बल शरीर में बल भरकर
वो उड़ती है।
जिसको देती जन्म वही, ढाते है उस पर ही जुल्म अरे
फिर भी सब सहकर आगे बढ़ती
वो उड़ती है।
साहस, शक्ति, सहनशीलता, त्याग, सब कुछ उसके पास
नही मिल पाया अधिकार मगर
ना हार मानती आगे बढ़ती
वो उड़ती है।
स्वर्णश्रृंखला में बांध उसे, साधन था बनाया सदियों तक
देवदासी नृत्यांगना से बारबाला, कुत्सितता की मारी
फिर भी दुर्गा लक्ष्मी बनती ही रही।
वो उड़ती है।
सती नाम पर जीवित ही, अग्नि में झोंकी जाती थी
कर्मकांड के तांडव झेल झेल भी
ऊँचे शिखरों को चूम चूम
वो उड़ती है।
हर एक क्षेत्र में फहराया, विजय ध्वज ऊँचा
बढ़ाया गौरव देश का हरदम ही
वो उड़ती है।

ख़ामोशी

ख़ामोशी एक धीमा जहर है,
निगल जाती है ये ज़िन्दगी।
तोड़ डालो खामोशियों को,
बोलना सीखो खुद के लिए।

ख़ामोशी से कब मिला भला,
छोटे से शिशु को भी आहार।
ख़ामोशी दे देती है बीमारियां,
छोड़ो इसे,उठाओ आवाज़।

ख़ामोशी निगल जाती है देखो,
वशिष्ठ नारायणजी सी प्रतिभा।
मतसहो अन्याय न सहने ही दो,
जागो खुदके लिए बन साहसी।

मार डालेगी ये ख़ामोशी अगर,
नहीं मारा तुमने अगर इसको।
स्वत्व के लिए झुकना कभी,
बन जाता खुद के लिए भारी।

ख़ामोशी एक धीमा जहर है,
बचना इससे हमेशा ही साथी।
तड़पता छोड़ देती है यह हमें,
जिन्दा ही नहीं छोड़ती कभी।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

'आपातकाल में सृजन का महत्व और अन्तरा शब्दशक्ति का नव प्रयास'

आज आपातकाल की इस कठिन घड़ी में साहित्य सृजित करके साहित्यकार लोगों का मनरंजन तो करते ही हैं साथ ही साथ उनको अपना समय व्यतीत करने का सुनहरा अवसर भी प्रदान करते हैं साथ ही साथ उनके परेशान मन में साहस का संचार भी करते हैं। लोगों को एक सही मार्ग दिखाने का कार्य साहित्य का सदा से ही रहा है। इस समय साहित्य की यही भूमिका सामाजिक संदर्भ में बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाती है।

आपातकाल के इस कठिन घड़ी में अन्तरा परिवार के शब्दशक्ति द्वारा साहित्य सृजन के महत्त्वपूर्ण कार्य में बहुत विशिष्ट भूमिका निभाई जा रही है। इसका कार्य प्रारंभ से ही सराहनीय रहा है जिसमें प्रमुख भूमिका नारीभूषण परम आदरणीया प्रीति सुराना जी का रहा है जिनकी मैं हृदयतल से सम्मान करती हूं। इनके द्वारा इस कठिन घड़ी में भी साहित्य सृजित करने के लिए विविध प्रकार के कार्यों का सम्पादन किया जा रहा। उनके इस योगदान का साहित्य सदैव ही आभारी रहेगा।

रचनाकार
डॉ. सरला सिंह 'स्निग्धा'
१८० ए पाकेट ए-३, मयूर विहार
फेस-३, दिल्ली-११००९६

Email- sarlasingh55@gmail.com
Mobile - 8004005545

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला - बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क - 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-166-4
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/